

Manju: अमित्रका वृत्रका दस्युका च 10, 83, 3 (vgl. 170, 2). आ दस्युघ्ना म-
नसा याञ्छ्यस्त्वम् 4, 16, 10. superl. दस्युकृत्तम ved. P. 8, 2, 17, Sch. von Bu-
dha, dem Sohne der Tārā und des Soma, HARIV. 1349. 1352. 1354.

दस्युः (vgl. दंसन, दंसम्, दंसु, दंसिष्ठ, दस्यु) UNĀDIS. 2, 13. adj. *wunderthätig, wunderbar helfend*; hauptsächlich von den Aṣvin gebraucht, aber nur im nom. und voc.: दस्युर् दंसिष्ठा रथ्या रथीतमा RV. 1, 182, 2. उभा हि दस्यु भिषजा मयेभुवोभा दंसस्य वचसो बभूवथुः 8, 75, 1. 26, 6. 76, 7. 6, 62, 5. 10, 40, 14 u. s. w. voc. 1, 30, 17. 180, 5. 4, 43, 4. 7, 68, 1 u. s. w. voc. du. von Indra-Vishnu 5, 69, 7. voc. sg. von Pūshan 1, 42, 5. 6, 56, 4 (womit zu vgl. 10, 26, 1, wo दस्यु schwerlich die ursprüngliche Lesart ist). voc. pl. von den Marut: न वो दस्यु उयं दस्युति धेनुवः 5, 55, 5. दस्यो = अश्विनी AK. 1, 1, 4, 47. TRIK. 1, 1, 65. H. 182. an. 2, 430. Daher zur Bez. der Zahl zwei SŪRJAS. 1, 30. 31. 33 (दस्युः). In दस्युदीनाम् 8, 9 bezeichnet das Wort das Nakshatra Aṣvin. Dasra sg. als N. pr. des einen der beiden Aṣvin (der andere heisst Nāsati) BHADD. in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. MBH. 1, 723. 8, 4594. 12, 7583. HARIV. 601. H. c. 34. MED. r. 47. Nach H. an. und MED. m. Esel, nach UGĒVAL. Rāuber, Dieb (vgl. दस्युः) nach UNĀDIR. im SAṆKSHIPTAS. (ÇKDR.) n. die kalte Jahreszeit (शिशिरम्).

दस्युदेवता (द० + दे०) f. das Nakshatra Aṣvin H. 108.

दस्युम् (द० + सू) f. die Mutter der Aṣvin, Bein. der Saṁgā, der Gemahlin des Sonnengottes, TRIK. 1, 1, 101.

1. दक्ष, दक्षति DHĀTUR. 23, 22. ददाक्ष; अघातीत् (Vop. 8, 80), ved. अघा-
क, धाक (धक् gehört zu दघ्), धन्ति; partic. धन्तत् und दक्षत् (vgl. RV. PRĀT. 4, 41); धन्ति (Kār. 6 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10), दक्षिष्यति ep. MBH. 1, 2120. BHĀG. P. 4, 14, 12; ep. auch med.; दग्धुम्, दग्धा, दग्ध; *verbrennen, durch Feuer verzehren, brennen*: मा मामधो दक्षतयश्चितो धाक् RV. 1, 138, 4. 2, 15, 4. तृणा दक्षन् 3, 29, 6. दारु धन्तत् 6, 3, 4. 10, 91, 7. — 1, 130, 8. 4, 4, 4. 28, 3. 7, 1, 7. यदग्निरो अदक्षत्प्रविश्यं AV. 1, 25, 1. 5, 23, 13. 8, 1, 11. 12, 5, 61. 62. यद्यु मियते स्वैरेव तमग्निर्दक्षति ÇAT. BH. 12, 3, 5, 2. 5, 1, 15. 2, 3. ग्राम्यो ऽग्निः शालो दक्षति KAUC. 133. ĀCY. GĒRH. 4, 4. KĀT. ÇR. 25, 13, 28. ÇĀNKH. ÇR. 18, 24, 14. नामिर्ददाक्ष रोमापि MBH. 8, 116. 115. जनमेजयस्य वो यज्ञे धन्ति 1, 1058. 5834. 8090. 8329. कथमग्निर् नो धन्ति (pol. fut.) 8383. गृध्रं दग्धा R. 1, 1, 53. 75. तं क्वा काष्ठैरदक्षत् 54. BHART. 2, 47. RAĞH. 12, 63. अन्धं कंचिद्धानुश्च — शवम् KATHĀS. 13, 99. उक्तो दक्षति चाङ्गारः शीतः कृत्वायते करम् HIT. 1, 74. *brennen* (medic.) SUÇR. 1, 32, 5. 2, 48, 1. — med.: धन्ति शायकैश्चेमाम् — पुरीम् R. 5, 33, 38. 34. 2. MBH. 1, 8159. दक्षन् नः 5788. तमेवान्यान्दक्षसे ज्ञातवेदः 14, 245. अतन्द्रितो दक्षते ज्ञातवेदाः 5, 818. *verbrennen, versengen* so v. a. *nach Art des Feuers vollständig vernichten*: एकमेव दक्षत्यग्निर्न ड्रु-
पसर्पिणम् । कुलं दक्षति राजाग्निः M. 7, 9. वृत्तानङ्गारकारीव मैनान्धातीः समूलकान् MBH. 2, 2109. 5, 7016. अघ्नन् (lies अघ्नयं) तानक् क्रूरस्तदा सर्वान् 7, 2541. दक्षत् (imperf.) तत्रं परस्परम् 1, 138. लोकानिव धन्ति रूपा BHĀG. P. 4, 4, 9. 14, 12. RĀĠA-TAR. 5, 478. अदक्षत् HARIV. 13993. MBH. 6, 5070. मा वो धन्ते चतुषा दारुणेन 14, 237. जगाम चम्यो प्रति ध-
ह्यमाणस्तमङ्गारं सपुरं राष्ट्रम् 3, 10034. तस्य ज्ञानाग्निना पापं सर्वं दक्षति वेदवित् M. 11, 246. 6, 72. 12, 101. ÇĀNTIC. 3, 13. *brennen* so v. a. *in heftige Gluth —, in Wallung versetzen, aufregen; am Herzen nagen*: अष्टौ

यस्याग्रयो ज्येते न दक्षते मनः सदा MBH. 14, 112. मदनान्तो दक्षति मम मानसम् GĒ. 10, 2. यन्मां तस्याः कपोलो दक्षतः PAÑĀT. 1, 225. तपति तु-
नुगात्रि मदनस्त्वामनिशं मां पुनर्दक्षत्येव ÇĀK. 63. पुनर्दक्षिं वाष्पप्रकर-
लुषामर्पितवती मयि क्रूरे यत्तत्सविषमिव शल्यं दक्षति माम् 136. इत्यमा-
त्मकृतमपरिहृतं चापलं दक्षति 69, 12. यावज्जीवं ज्ञो (सुतः) दक्षेत् PAÑ-
ĀT. Pr. 4.

— pass. *verbrannt werden, verbrennen, brennen, in Flammen stehen*:
तत्र दक्षते पापकृत् M. 8, 372. MBH. 4, 798. ते दक्षते स्म वक्रिना 2, 1140.
3, 2935. दक्ष्यमानामिवाकेण 2670. न च दक्षति गच्छत्यः सुतैरपि पांशु-
भिः 13, 1468. भृगुर्भयमानो न देके NĪR. 3, 17. दक्षते गृहाः AV. 12, 4, 3.
दिशः SHADV. Br. 3, 9. तस्मिन्वने दक्ष्यमाने MBH. 1, 8330. दक्षतस्तस्य —
दावस्य 8210. 3, 2608. *durch Feuer entfernt werden, getilgt werden*
überh.: दक्षते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः । तथेन्द्रियाणां दक्षते
दोषाः प्राणस्य नियक्तात् ॥ M. 6, 71. *brennen, von Wunden SUÇR. 1, 103,
17. von innerer Gluth verzehrt werden, — vergehen, sich abhärten*: वि-
षेण नागराजस्य दक्ष्यमानो दिवानिशम् MBH. 3, 2843. दक्ष्यमान इवाग्निना
2, 1691. राजा स्वतेजोभिरदक्ष्यतात्तर्भागीव मन्त्रोपधिरुद्धवीर्यः RAĞH. 2, 32.
अग्निर्दक्ष्यमानस्य MBH. 3, 2754. नृत्पियासाभ्यां च दक्ष्यमानात्तर्बकिःश-
रीरः BHĀG. P. 5, 26, 14. दक्ष्यमानः स शोकेन MBH. 3, 2647. शोकेन देके ज-
नतातिमात्रम् BHART. 3, 11. देके चातीव मन्युना 14, 60. दक्ष्यमानां भृशं बा-
लाम् MBH. 3, 2731. 2913. R. 1, 58, 12. मनो हि मे द्रुयते दक्षते च DBAUP.
6, 4. अमर्षवशमापन्ना दक्ष्यामि MBH. 2, 1690. दक्षत्यङ्गानि मे 1, 2061. तेन
मे व्याकुलं चित्तं कृदयं दक्षतीव च 5048. SĀV. 3, 3. दक्षे ऽहं मधुनो लेद्वै-
र्दिविरुप्रैयया गिरिः *gequält —, mitgenommen werden* BHART. 6, 82. Mit
transit. Bed. *verbrennen*: (ताम्) सक्नेनाद्य दक्ष्ये MBH. 4, 799. — partic.
दग्ध 1) *verbrannt* AK. 3, 2, 48. H. 1486. MED. dh. 7. AV. 18, 2, 34. KĀTJ.
ÇR. 1, 10, 13. 25, 8, 19. M. 8, 189. MBH. 3, 2400. HIP. 1, 6, 43. PAÑĀT. 98,
1. BHĀG. P. 5, 14, 4. *angebrannt* (von Speisen): पन्नापाम् (lies: पन्निपाम्)
आमिषं पर्याम् । गोवर्ष्यमामिषं तीरं फले जम्बीरमामिषम् । आमिषं रक्त-
शाकं च सर्वं च दग्धमामिषम् KARMALOĀNA im ÇKDR. Uneig. *in Gluth*
versetzt, verzehrt, gemartert, gequält: प्रियावियोगानलदग्धमानस R. 1,
10. व्याधिदग्धात्तर RĀĠA-TAR. 6, 104. दग्धजठरं (BHART. 3, 22), दग्धोदरं
(HIT. 1, 62) *ein vom Feuer der Verdauungskraft* (vgl. जठराग्नि, जठरो
ऽग्निः) *verbrannter d. i. hungriger Magen*. — 2) *vom Gram verzehrt, be-
trübt*: रूढायामपि वाचि सस्मितमिदं दग्धाननं ज्ञायते AMAR. 24. Schol.:
दग्धमिति धिक्कारितौ. — 3) *verbrannt so v. a. ohne Saft und Kraft*:
(ब्रह्म) कुतीर्थादागतं दग्धमपवर्षां च भन्तितम् ÇIKSHĀ 50 in Ind. St. 4, 268.
— 4) *unheilvoll*: दग्धान्तरं gewisse Buchstaben, die in Gedichten für
unheilvoll gelten, SHAKESP. Hindust. Dict.; vgl. दग्ध 2, b. — 3) = विद-
ग्धं *verschmilt, pflffig* DAÇAK. in BENF. Chr. 193, 15. — Vgl. दग्ध.

— caus. दक्षयति *verbrennen lassen —, heissen*: स्त्रीम् — पूर्वमारि-
णीम् । दक्षयेदग्निद्रेणा यज्ञपात्रैश्च M. 3, 167. पुमांसं दक्षयेत्पापं शयने तप्त
आपते 8, 372. JĀĠN. 1, 89. MBH. 1, 588. 5832. 8309. 5, 2418. 3439. 11, 798.
HARIV. 9798. KATHĀS. 4, 107. *braten lassen*: व्याधिर्मासान्यदीदक्षन् HA-
RIV. 13523.

— desid. दिधत्ति *im Begriff stehen zu verbrennen, zu Grunde zu rich-
ten, zu vernichten*: अग्रे मा त्वं प्रवर्धिष्ठाः काचिना न दिधत्सि MBH. 1,
1244. दिधत्तन्निव 8189. 8325. 2, 2. 3, 468. 4, 716. 818. DAÇ. 1, 35. R. 2, 97,